International Organization of Research & Development (IORD)
ISSN: 2348-0831
Vol 11 Issue 02 | 2024

राजस्थान की पारंपरिक चित्रकला में सामाजिक और धार्मिक प्रतीकः फड़, पिचवाई और मिनिएचर कला का तुलनात्मक विश्लेषण

चारू बारी (शोधार्थी), डॉ. सोनू सारण (शोध निदेशक), विभाग – इतिहास, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, चूड़ेला, झुंझुनूं

ईमेलः charubari92@gmail.com

सारांश (Abstract)

राजस्थान की पारंपरिक चित्रकला में धार्मिकता, सामाजिक ताने–बाने, और सांस्कृतिक प्रतीकों की अद्वितीय छाप दिखाई देती है। फड़, पिचवाई और मिनिएचर जैसी चित्रशैलियाँ न केवल सौंदर्यात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि इनके माध्यम से लोकआस्था, धार्मिक आख्यान, सामाजिक संरचना, जातीय परंपराएँ और भक्ति परंपरा को भी चित्रित किया गया है। यह शोध आलेख इन तीन प्रमुख चित्र परंपराओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें उनके रूप, विषयवस्तु, प्रतीकात्मकता, शैलीगत भिन्नता और सामाजिक प्रभावों का आलोचनात्मक विवेचन किया गया है।

प्रमुख शब्द (Keywords)

राजस्थानी चित्रकला, फड़, पिचवाई, मिनिएचर, धार्मिक प्रतीक, लोककला, भक्ति परंपरा, चित्र शैली, तुलनात्मक अध्ययन, लोक जीवन

1. प्रस्तावना

राजस्थान की लोक और दरबारी चित्रकलाएँ भारतीय कलात्मक परंपरा की अनुपम धरोहर हैं। इनमें सामाजिक जीवन, देवी–देवताओं की आराधना, लोकनायक कथाएँ, और भक्ति आंदोलन के प्रतीक उभरते हैं। फड़ चित्रकला जहां लोकनाट्य और भजन गायन से जुड़ी है, वहीं पिचवाई चित्रकला नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर से तथा मिनिएचर चित्रकला शाही संरक्षण और लघु विवरणों की सूक्ष्म शैली से जुड़ी है।

2. फड़ चित्रकलाः लोकनायक और समाज

(क) मूल स्वरूपः

- लंबी कपड़े की पट्टी पर चित्रित दृश्यावलियाँ
- भोपाओं द्वारा कथा गायन के लिए प्रयुक्त
- पात्ररू पाबूजी, देव नारायण, रामदेव जी

(ख) सामाजिक और धार्मिक प्रतीकः

- लोकदेवताओं का चित्रण

- पशुपालन, युद्ध, स्त्री शक्ति, जातीय संरचना
- देवालय, चौपाल, ग्रामसभा आदि सामाजिक इकाइयाँ

(ग) शैलीगत विशेषताएँ:

- उजले और लाल रंगों की प्रधानता
- भागों में विभाजित दृश्य
- कथा के अनुसार दृश्यक्रम

3. पिचवाई चित्रकला: भक्ति और भव्यता

(क) परिचय:

- श्रीनाथजी (कृष्ण) की पूजा से जुड़ी
- नाथद्वारा (राजसमंद) में केंद्रित
- भित्तिचित्र, कपड़े पर बनाए गए, मंदिरों में प्रयोग

(ख) धार्मिक प्रतीकात्मकता:

- रासलीला, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा
- कमल, गाय, मोर, तुलसी, शंख, मुरली – कृष्ण के प्रतीक
- गोपियों और भक्तों का समूह चित्रण

(ग) कलात्मक विशेषताएँ:

- गहरे रंग, स्वर्ण रेखांकन
- केंद्र में श्रीनाथजी की मूर्ति, चारों ओर श्रृंगार
- मंदिर की अनुष्ठानिक संरचना की झलक

4. मिनिएचर चित्रकला: दरबारी सौंदर्य और साहित्यिक बिंब

(क) उत्पत्ति और विकास:

- मुगल और राजस्थानी शैलियों का समन्वय
- बूँदी, किशनगढ़, मेवाड़, जयपुर और मारवाड़ शैलियाँ
- धार्मिक, प्रेम, युद्ध और काव्य दृश्य

(ख) धार्मिक और सामाजिक विषय:

- रामायण, महाभारत, भागवत पुराण
- राधा–कृष्ण, मेवाड़ के महाराणा, शिकार दृश्य
- स्त्री सौंदर्य, श्रृंगार, राजकीय आयोजन

(ग) शैलीगत विशेषताएँ:

- लघु, बारीक रेखाएँ
- गहरे हरे, नीले, सुनहरे रंग
- पृष्ठभूमि में वन, नदी, आकाश, महल

5. तुलनात्मक विश्लेषण

बिंदु	फड़	पिचवाई	मिनिएचर
प्रयोग	लोककथा गायन	मंदिर अनुष्ठान	राजदरबार, साहित्य
माध्यम	कपड़ा	कपड़ाधभित्ति	कागज
विषयवस्तु	लोकदेवता	श्रीकृष्ण	धार्मिकध्राजकीय
शैली	लोक शैली	भक्ति शैली	दरबारी शैली
प्रतीक	पाबूजी, देव नारायण	गोवर्धन, गाय, तुलसी	राधा–कृष्ण, राजा

6. धार्मिक प्रतीकात्मकता का विस्तार

- फड़ में – पाबूजी को वीरता के प्रतीक के रूप में, जातीय गौरव
- पिचवाई में – कृष्ण के विविध रूपों में परमात्मा की झलक
- मिनिएचर में – साहित्य और अध्यात्म का एकीकृत रूप

7. सामाजिक संरचना और चित्र कला

- चित्रकला में स्त्री की भूमिका – गोपी, रानी, भक्तिन, वीरांगना
- जातीय तत्व – फड़ में पशुपालक समाज, पिचवाई में ब्रज संस्कृति
- त्योहारों, उत्सवों, शृंगार और जीवनशैली का सजीव चित्रण

8. संरक्षित संस्थाएँ और संरक्षण प्रयास

- नाथद्वारा चित्र संग्रहालय, जोधपुर कला दीर्घा
- IGNCA और Rajasthani School of Arts
- UNESCO द्वारा चिन्हित परंपराएँ (Intangible Heritage)
- आधुनिक कलाकारों द्वारा पुनर्नवा प्रयास

9. समकालीन प्रयोग और प्रवृत्तियाँ

- फ्यूजन आर्ट, डिजिटल फड़, पिचवाई होम डेकोर
- वैश्विक मंचों पर राजस्थानी चित्रकला की प्रदर्शनी
- कला बाजार में इन चित्रों की मांग
- कला महोत्सवों, प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक पर्यटन में उपयोग

10. निष्कर्ष

फड़, पिचवाई और मिनिएचर – ये तीनों चित्रकला शैलियाँ राजस्थान की सांस्कृतिक आत्मा की अभिव्यक्ति हैं। इनमें सामाजिक गतिशीलता, धार्मिक आस्था, कलात्मक उत्कृष्टता और सांस्कृतिक जटिलता का समावेश होता है। एक ओर जहाँ फड़ लोक जीवन की गति को दर्शाती है, वहीं पिचवाई भक्ति और श्रद्धा का चित्र है, और मिनिएचर कला ज्ञान, सौंदर्य और सामंती वैभव का प्रतीक बनती है। इन चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन न केवल कलात्मक परिप्रेक्ष्य में बल्कि सांस्कृतिक इतिहास की गहराई तक पहुँचने का मार्ग खोलता है।

संदर्भ सूची

1. देवी, सी. (2019). राजस्थानी चित्रकलाः एक सांस्कृतिक अध्ययन
2- Sharma, K. (2021). *Phad and Pichwai: Temple Art of Rajasthan*
3- Nathdwara Temple Archives, Govt. of Rajasthan
4- Rajasthan State Art Exhibition Catalogues (2017–2023)
5- IGNCA (2020). *Visual Cultures of India*
6- Dwivedi, R. (2022). *Miniature Painting of Mewar and Bundi*
7- Singh, A. (2018). “Social Symbols in Rajput Art.” *Journal of Indian Heritage*
8- Ministry of Culture, Govt. of India. *Documentation on Folk Arts*
9- Joshi, R. (2020). *Sacred Narratives in Pichwai Art*
10- Purohit, V. (2023). “Phad Art: Revival and Modern Practice.” *Contemporary Art Review*